पब्लिकेशन नं० 548

बफ़ैज़ः हुज़ूर मुफ़्ती-ए-आज़म हज़रत अल्लामा शाह मुहम्मद मुस्तफ़ा रज़ा क़ादिरी नूरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु

नाम निहाद अहले हदीस

यानी

ग़ैर मोक़ल्लिदों के अक़ीदे

मुरत्तिब

मुफ़्ती मुहम्मद अख़्तर हुसैन क़ादरी

उसताज़ व मुफ़्ती दारुल ऊलूम अलीमिया

जमदा शाही बस्ती (यू.पी.)

प्रकाशक

रजा एकेडमी

52-डोनटाड स्ट्रीट, खड़क, मुम्बइ-9

टेलीफोनः 022-66342156

अर्ज़े मुरत्तिब

बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम

अम्मा बाद!

इस वक़्त नाम निहाद अहले ह़दीस फिरक़ा, मिल्लते इसलामिया के लिए सब से अज़ीम फितना बना हुआ है। वह़दते इसलामी को टुकड़ा-2 करने और उम्मते मुस्लिमा की तज़लील व तह़क़ीर करने के तअ़ल्लुक़ से ये फ़िरक़ा निहायत अहम रोल अदा कर रहा है और सऊदी रियाल के ज़ेरे साया दुनिया के मुख़तलिफ़ ख़ित्तों में अपनी बद अक़ीदगी फैलाने में सरगरम है।

चंद माह पहले ध्यनोरा टाँडा ज़िला बरेली शरीफ़ में इस फ़िरक़े के एक शख़्स ने खुराफ़ात का वह बाज़ार गर्म किया कि पूरे ख़ित्ते की फ़िज़ा खराब और माह़ौल ना खुशगवार हो गया।

गै़र मुक़ल्लिदिय्यत के पेट से जनम लेने वाले इस फ़ितने को खतम करने के लिए हुज़ूर ताजुश शरीआ़ मुर्शिदे गिरामी अ़ल्लामा मुफ़्ती शाह मुह़म्मद अख़तर रज़ा क़ादरी अज़हरी दामा ज़िल्लुहुल आ़ली की सरपरस्ती में एक जलसा करने का प्रोग्राम तै हुआ।

इसी ह़वाले से हुज़ूर ताजुश शरीआ़ दामत बरकातूहुमुल आ़लिया ने मुझ फ़क़ीर अखतर को बरेली शरीफ़ बुलाया हुक्म मानते हुऐ फ़क़ीर आसतानऐ रज़विया बरेली शरीफ़ हा़ज़िर हुआ। मुलाकात होने पर दौराने गुफ़्तुगू हुज़ूर वाला की

ख़िदमत में अर्ज़ किया के जलसा के मौक़ा पर अक़ाइदे ग़ैर मुक़ल्लिदीन को किताबचे की शक्ल में छाप कर तक़सीम किया जाये। हुज़ूरे वाला ने इस राय को पसंद फ़रमाया और फ़िर मुझ को ही इस काम के लिए मूक़र्रर कर दिया।

चुनान्चे किताब व सुन्नत के ख़िलाफ़ ग़ैर मुक़ल्लिदीन के अक़ाइद का यह मजमूआ पेश किया जा रहा है ताकि मुसलमान इस गुमराह फ़िरक़ा से दूर रहें और इस की गुमराही से खुद को महफ़ूज़ रखें।

रब्बे करीम मेरी इस कोशिश को कुबूल फ़रमाए और मुसलमानों के ईमान व अक़ीदे की हिफ़ाज़त फ़रमाए, उन्हें तमाम बद मज़हबो से दूर रखे और हम सब को दारैन की बरकतों से माला माल फरमाए। (आमीन)

मुहम्मद अख़तर हुसैन क़ादरी
दारुल ओलूम अलीमिया
जमदा शाही, बस्ती,युपी

अल्लाह तआ़ला के बारे ग़ैर मुकल्लिदों के अक़ीदे

(1) अल्लाह तआ़ला झूठ बोल सकता है।

वहाबियों के इमाम मोलवी मुह़म्मद इसमाईल देहलवी ने लिखा है कि।

"पस ला नुसल्लिमु कि किज़्बे मज़्कूर मुह़ाल बमाना मस्तूर बाशद" "इला कौ़लेही" "वइल्ला लाज़िम आयद कि कुदरते इनसानी ज़ाइद अज़ कुदरते रब्बानी बाशद"

(रिसाला यक रोज़ा फ़ारसी पृष्ट 17, मतबूआ़ मुलतान)

यानी हमें यह तसलीम नहीं कि अल्लाह तआ़ला के लिए झूठ मुह़ाल बिज़्ज़ात है वरना लाज़िम आएगा कि कुदरते इनसानी कुदरते रब्बानी से ज़ाइद हो जाये।

ग़ैर मुक़ल्लिदों के इमाम मोलवी सनाउल्लाह अमरितसरी ने लिखा है कि।

"अल्लाह तआ़ला झूठ बोलने पर क़ादिर है, कहना अ़ैने ईमान है"
(अख़बार अहले ह़दीस अमरितसरी पृष्ट 2, 27/अगस्त 1915)

(2) अल्लाह तआ़ला के अन्दर मक्र है।

मुह़म्मद इसमाईल देहलवी "तक़्वीयतुल ईमान" पृष्ट 52 पर लिखते हैं।

"सो अल्लाह के मक्र से डरा चाहिये"।

(3) अल्लाह तआ़ला फ़ाइले मुख़्तार नहीं।

अ़ल्लामा इब्ने ह़जर इब्ने तैमिया ग़ैर मुक़ल्लिद का अ़क़ीदा ब्यान करते हुए "फ़तावा ह़दीसिया" पृष्ट 100 पर लिखते हैं।

"अल्लाह तआ़ला फ़ाइले मुख़्तार नहीं"

(4) अल्लाह तआ़ला के इल्मे ग़ैबे ज़ाती का इनकार।

इमामुल वहाबिया मोलवी मुह़म्मद इसमाईल देहलवी ने लिखा है।

"सो इस तरह़ ग़ैब का दरयाफ़्त करना अपने इख़्तियार में हो कि जब चाहे कर लीजिये ये अल्लाह साह़ब ही की शान है।"

(तक़वियतुल ईमान पृष्ट 20, प्रकाशित देहली)

(5) अल्ला तआ़ला कुर्सी पर पैर रखे हुए बैठा है।

गैर मुक़ल्लिदों के इमाम और मुजद्दिद इब्ने क़य्यिम का अक़ीदा है कि।

"यानी मेरा अ़क़ीदा है कि अल्लाह तआ़ला अ़र्श व कुर्सी के ऊपर मौजूद है उस के दोनों क़दम कुर्सी पर रखे हैं।"

(6) अल्लाह तआ़ला अर्श के बराबर है।

इमामुल वहाबिया इब्ने तैमिया का अ़क़ीदा बयान करते हुऐ शैखुल इसलाम अ़ल्लामा इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी लिखते हैं।

"यानी अल्लाह तआ़ला अर्श के बराबर है न अर्श से बड़ा है न छोटा।"

(7) अल्लाह तआ़ला मोह़ताज है।

अ़ल्लामा इब्ने ह़जर मक्की ने इब्ने तैमिया के अ़क़ाइद बयान करते हुऐ लिखा है।

"अल्लाह तआ़ला की ज़ात ऐसी ही मोह़ताज है जैसे कुल जुज़ का मोह़ताज है" (फ़तावा ह़दीसिया, पृष्ट 100 प्रकाशित मिस्र)

(8) अल्लाह तआ़ला मुजस्सम है।

ग़ैर मुक़ल्लिदों के इमाम मौलवी वह़ीदुज़्ज़मा हैदराबादी ने लिखा है।

"यानी अल्लाह तआ़ला के लिऐ चेहरा, आँख, हाथ, हथेली, मुटठी, उंगलियाँ, बाज़ू, सीना, पहलू, कोख, पैर, टाँग, पिंडली और मूंढा है जैसा कि उस की मुक़द्दस ज़ात की शायाने शान है"

गोया वहाबियों के नज़दीक अल्लाह तआ़ला उन्ही तमाम अंगों से बना है जिन से एक आ़म इनसान होता है।

(9) अल्लाह तआ़ला अपनी मिस्ल पैदा कर सकता है।

वहाबियों के मशहूर मुसन्निफ़ क़ाज़ी अब्दुल अह़द खाँ पुरी फ़िरक़ऐ वहाबिया के इमाम मोलवी सनाउल्लाह अमरितसरी का अ़क़ीदा बयान करते हुऐ लिखते हैं।

"रब तआ़ला अपनी मिस्ल पैदा करने पर क़ादिर है"

(अलफ़ैसलतुलहि़जाज़िया, पृष्ट 23)

इसी किताब के पृष्ट 8 पर क़ाज़ी सा़ह़ब लिखते हैं।

"मोलवी सनाउल्लाह अमरितसरी अल्लाह़ अ़ज़्ज़ व जल्ल की हज़ारों मिसलें क़रार देता है" (पृष्ट 8)

(10) सि़फ़ाते बारी तआ़ला हादिस है।

ग़ैर मुक़ल्लिदों के इमाम मोलवी वह़ीदुज़्ज़मा हैदराबादी ने लिखा है।

"ग़र्ज़ सिफ़ाते अफ़आ़लिया का हुदूस और तग़य्युर अहले हदीस के नज़दीक जाइज़ है" (तैसीरुलबारी, जिल्द4, पृष्ट 4)

(11) अल्लाह तआ़ला पर इल्जाम जाइज़ है।

फ़िरक़ऐ ग़ैर मुक़ल्लिदिय्यत के मुजतहिदे वक़्त अब्दुल्लाह रोपड़ी ने लिखा है।

"ख़ाविन्द बीवी का तअ़ल्लुक़ और उन का इत्तिफ़ाक़ व मुह़ब्बत से रहना उस को शरीअ़त ने इतनी अहमियत दी है कि उस के लिऐ अल्लाह पर झूठ बोलना भी जाइज़ है।"

(फ़तावा अहले ह़दीस, पृष्ट 370)

नबी करीम अ़लैहिस्सलातु वत्तस्लीम से मुतअ़ल्लिक़ अक़ीदे

(1) नबी पाक अ़लैहिस्स़लातु वत्तस्लीम अपनी जान के नफ़ा व नुक़सान के मालिक नहीं।

मुह़म्मद बिन अ़बदुल वहाब नजदी ने लिखा है।

"बिला शुब्हा मुह़म्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अपनी

जान के नफ़ा व-नुक़सान के मालिक नहीं चे जायेके अ़बदुल क़ादिर रज़िअल्लाहु अ़न्हु वग़ैरा।''

इसी तरह़ हिन्दुस्तान में वहाबियत को पहली बार लाने वाला इस्माईल देहलवी लिखता है:

''सो उन्होंने बयान कर दिया कि मुझ को न कुछ कुदरत है न कुछ गै़बदानी, मेरी कुदरत का ह़ाल तो ये है कि अपनी जानं तक के भी नफ़ा व नुक़सान का मालिक नहीं तो दूसरे का तो किया कर सकूँ''

(तक़वियतुल ईमान, पृष्ट 24, प्रकाशित देहेली)

यही देहलवी साहब एक दूसरी जगह लिखते हैं:

''जिस का नाम मुह़म्मद या अली है वह किसी चीज़ का मालिक व मुख़्तार नहीं'' (तक़वियतुल ईमान, पृष्ट 42)

(2) नबी पाक अलैहिस्सलाम मुशकिल कुशा नहीं हैं।

शैख मुह़म्मद शफ़ी अपनी किताब तौह़ीदे ख़ालिस में लिखते हैं।

''अगर अपने रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मुशकिल कुशा होते तो क्या किसी काफ़िर की ताक़त होती के दनदाने मुबारक शहीद करके चला जाता।''

(3) नबी पाक अलैहिस्सलाम का वसीला जाइज़ नहीं।

मुह़म्मद बिन अ़बदुलवहाब नजदी का अ़क़ीदा है कि।

''जिस ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को वसीला बनाया उस ने कुफ्र किया।'' (अददुररुस्सुन्निया, पृष्ट 39)

ग़ैर मुक़ल्लिदों के ह़ाफ़िज़ अ़बदुल्लाह रोपड़ी लिख़ते हैं।

''वफ़ात के बाद नबी का वसीला भी जाइज़ नहीं तो औरों का किस तरह़ जाइज़ होगा'' (वसील-ए-बुर्जुर्गां, पृष्ट 3)

(4) नबी पाक में कुछ कुदरत नहीं।

इसमाईल देहलवी ने तक़वियतुल ईमान पृष्ट 24 पर लिखा है।

''(हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया) कि कुछ कुदरत और गै़बदानी मुझ मे नहीं''।

(5) रसूल के चाहने से कुछ नहीं होता।

यही देहलवी साहब इस किताब के पृष्ट 58 पर लिखते हैं। ''सारा कारोबार अल्लाह ही के चाहने से होता है रसूल के चाहने से कुछ नहीं होता है।''

(6) नबी के ज़िन्दा समझने वाले का ईमान बेकार है।

वहाबियों के मोलवी रफ़ीक़ ख़ाँ पिसरोरी ने लिखा है: ''जो उस हैय्य ला यमूत के सिवा किसी को ज़िन्दा रहने वाला ख़्याल करे वह नासमझ है'' उस का ख़्याल ख़ाम और ईमान बेकार है'' (इसलाहे अक़ाइद पृष्ट 139, 140)

(7) नबी का नमाज़ में ख़्याल आना गधे के ख़्याल से कई दरजे बदतर है:

इसमाईल देहलवी अपनी किताब ''सिराते मुस्तक़ीम'' पृष्ट 84, प्रकाशित दिल्ली में लिखता है।
''और शैख़ या उसी जैसे बुर्ज़ुगों की तरफ़ ख़्वाह रिसालत मआब ही हों अपनी हिम्मत को (ख़्याल) लगा देना अपने बैल और गधे की सूरत में मुस्तग़रक़ होने से ज़ियादा बुरा है''

(8) नबी पाक अ़लैहिस्सलाम मर कर मिटटी में मिलने वाले हैं।

वहाबियों के इमाम इसमाईल देहलवी नबी अकरम की तरफ़ झूठी निसबत करते हुऐ लिखता है।
''मैं भी एक दिन मरकर मिटटी में मिलने वाला हूँ''
(तक़वीयतुल ईमान पृष्ट 61)

(9) खुदा चाहे तो करोड़ों मुहम्मद पैदा करे।

इसमाईल देहलवी ने लिखा है।
''उस शहनशाह (अल्लाह) की तो यह शान है कि एक आन में एक हुक्में कुन से चाहे तो करोड़ों नबी, और वली और जिन्न व फ़रिश्ता, जिबरईल और मुहम्मद सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम पैदा कर डाले''।
(तक़वियतुल ईमान, पृष्ट 31 प्रकाशित देहली)

(10) ''लाइलाह इल्ललल्लाहु मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम'' का वज़ीफ़ा और ज़िक्र साबित नहीं।

वहाबियों के शैखुल कुल मियाँ नज़ीर हुसैन देहलवी से कलिम-ए-शहादत को वज़ीफ़ा बना कर विर्द करने के बारे में किसी ने सवाल किया तो उन्होंने जवाब दिया।

''वज़ीफ़ा मजमूआ़ ''लाइलाह इल्लल्लाहु मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाहि'' का साबित नहीं, वज़ीफ़ा के वासते सिर्फ़ ''लाइलाह इल्लललाहि'' है।

(फ़तावा नज़ीरिया, पृष्ट 449, भाग 1, प्रकाशित देहली)

(11) नबी करीम अ़लैहिस्सलाम और दूसरे इनसानों की वफ़ात बराबर।

ग़ैर मुक़ल्लिद मोलवी सनाउल्लाह अमरितसरी ने लिखा है! ''हमारा अ़क़ीदा है कि आँह़ज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम दूसरे इनसानों की तरह़ वफ़ात पा गये''।

(अख़बार अहले ह़दोस अमरतसरी, पृष्ट 3, 25 अप्रैल 1941)

(12) नबी करीम अ़लैहिस्सलाम को नूर समझना यहूदियों जैसा अ़क़ीदा है।

वहाबियों के मुनाज़िर मोलवी अह़मद दीन गखड़वी ने लिखा है कि।

''जो शख़्स यूँ कहता है कि ख़ुदा भी नूर है और नबी भी नूर हैं, ऐसा शख़्स बेशक इसलामी तालीम का मुन्किर है। और ऐसा अ़क़ीदा रखने वाले मुसलमान में और उन यहूद व नसारा में जिन्होंने अपने अन्बिया को रब बना लिया कोई फ़र्क़ नहीं है।''

(बुरहानुल ह़क़, पृष्ट 101, मुसन्निफ़ह़ू मोलवी अ़ह़मद दीन)

(13) नबी करीम अ़लैहिस्सलाम के मज़ार पर गुंबद बनाना बहुत बड़ी जिहालत है।

अगर तुम सवाल करो कि ये रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की क़ब्र पर जो बहुत बड़ा गुम्बद तामीर किया गया है। और उस पर बहुत माल ख़र्च किया गया है (ये शरअ़न केसा है?) जवाब में कहूँगा कि ये ह़क़ीक़तन बहुत बड़ी जिहालत है।

(14) नबी पाक के रौज़े पर सलाम के लिऐ जाना मना है।

वहाबिया की मशहूर किताब हिदायतुल मुसतफ़ीद, भाग 1 पृष्ट 811 पर है।

"क़सदन और इरादतन क़ब्रे नबी पर सलाम के लिऐ जाना ममनूअ़ (मना) है, शरीअ़त ने इस क़िस्म का कोई हुक्म नहीं दिया है।"

अंबियाऐ किराम और औलिआऐ इज़ाम के मुतअ़लिक़ अ़क़ाइद

(1) अंबिया, औलिआ को मुश्किल कुशा बिइज़निल्लाह मानना भी शिर्क है।

इसमाईल देहलवी ने लिखा है।

"मुशकिल में दसतगीरी,(सहायता) फ़तह़ व नुसरत और कशाइशे रिज़्क़ (गेज़ा की ज्यादती) वगैरा इन कलिमों की ताक़त उन (अंबिया व औलिया) को खुद ब खुद है, ख्वाह यूँ समझे कि अल्लाह ने उन को ऐसी कुदरत बख़्शी है हर तरह़ शिर्क साबित होता है। (तक़वियतुल ईमान, पृष्ट 10)

(2) अंबिया व औलिया से मदद चाहना कुफ़्र है।

वहाबियों के इमाम अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ आले मसऊ़द की छापी हुई किताब "मजमूअ़तुल तौह़ीद" पृष्ट 112 पर है।

"जिस ने अल्लाह तआ़ला के सिवा किसी और से मदद के लिऐ फ़रयाद की, उस ने कुफ्र किया।

शैख़ मुह़म्मद शफ़ी अपनी किताब "तौह़ीदे ख़ालिस" पृष्ट 43 पर लिखता है।

"मुश्किलात के वक़्त पीरों, फ़क़ीरों और औलियाअल्लाह को पुकारना शिर्क है"

इमामुल वहाबिया क़ाज़ी शोकानी लिखते हैं।

"जिस ने नबी या वली या उन के अ़लावा किसी को पुकारा और क़ज़ाऐ ह़ाजात (ज़रुरियात पूरी करना) और मसा़इब दूर

करने के लिऐ अर्ज़ किया, बेशक ये शिर्के आज़म (बड़ा शिर्क) से है।''

इब्ने तैमिया ने लिखा है।

''अंबिया और औलिया को पुकारना और इलतिजा करना शिर्क तक ले जाता है।'' (किताबुल वसीला जिल्द 1, पृष्ट 63)

(3) अल्लाह की बारगाह में अंबिया को सिफ़ारिशी मानना शिर्क है।

इसमाईल देहलवी ने लिखा है।

''अंबिया और औलिया अल्लाह तआ़ला की अ़ता से तसर्रुफ़(एखतेयार) फ़रमाते हैं और अल्लाह तआ़ला की बारगाह में हमारे सिफ़ारिशी और वकील हैं। ये सब कुछ शिर्क और खुराफ़ात हैं।'' (तक़वियतुल ईमान, पृष्ट 6)

यही देहलवी साह़ब एक दूसरी जगह लिखते हैं।

''सो जो कोई अपना वकील और सिफ़ारिशी समझे और नज़्र व नियाज़ करे तो उस को अल्लाह का बन्दा और मख़लूक़ ही समझे सो अबू जेहल और वह शिर्क में बराबर है।''

(तक़वीयतुल ईमान, पृष्ट 7)

नवाब सिद्दीक़ ह़सन भोपाली लिखते हैं:

''हर कि ऐतिक़ाद कुनद दर शजरे या ह़जरे या क़बरे या मलके या जिन्ने या इनसाने या ज़िन्दा या मुर्दा अज़ वली या नबी या उस्ताज़ या शैख़ या पीर कि वे नाफ़ेअ़ या ज़ार या मुक़र्रबे उ बकिरदिगार या शफ़ीअ़ निज़्दे परवरदिगार दर ह़ाजती अज़ ह़वाइजे दुनिया या दीगर कारोबार अस्त वे बमुजर्रद ई तवस्सुल व तश़फ़्फ़ुअ़ व तवस्सुल बसूऐ रब शिर्क अस्त''

(हिदायतुल मसाइल फ़ारसी, पृष्ट 308, प्रकाशित भोपाल)

(4) अंबिया-ए-किराम और मलाइक-ए-इज़ाम आ़म इन्सानों की तरह अ़ज़ाबे इलाही से खौफज़दा हैं।

इब्ने तैमिया ने लिखा है।

''मलाइका (फरीश्ते) व अंबिया भी वैसे ही खुदा के बनदे हैं जैसे तुम खुद हो, और वह भी उस की रह़मत के तालिब, और

उस के अज़ाब से उसी तरह़ लरज़ाँ व तरसाँ है जिस तरह़ तुम हो।'' (किताबुल वसीला, पृष्ट 42)

(5) अंबिया व औलिया आ़जिज़ व बेइख़्तियार हैं।

इसमाईल देहलवी ने लिखा है।

''अंबिया और औलिया को इस बात में कुछ बड़ाई नहीं कि अल्लाह ने उन को आ़लम में तसर्रुफ़ करने की कुछ क़ुदरत दी हो कि जिस को चाहें मार डालें, या औलाद देवें या मुश्किल खोल देवें या मुरादें पूरी कर देवें (इला क़ौलिही) इन बातों में सब बनदे बड़े और छोटे बराबर हैं आजिज़ और बे इख़्तियार''

(तक़्वियतुल ईमान, पृष्ट 25)

यही देहलवी साहब एक दूसरी जगह लिखते हैं।

''अल्लाह से ज़बरदस्त के होते ऐसे आ़जिज़ लोगों को पुकारना कि कुछ फ़ायदा और नुक़्सान नहीं पहुँचा सकते, मह़ज़ बे इन्साफ़ी है कि ऐसे शख़्स का मर्तबा ऐसे नाकारा लोगों (अंबिया व औलिया) को साबित कीजिये।''

(तक़्वियतुल ईमान, पृष्ट 29)

(6) अंबिया और औलिया को मानना महज़ ख़ब्त है।

तक़्वियतुल ईमान पृष्ट 7 पर है।

''औरों को मानना मह़ज़ खब्त है''

पृष्ट 18 पर है।

''अल्लाह के सिवा किसी को न मान''

पृष्ट 17 पर है।

''अल्लाह साहब ने फ़रमाया किसी को मेरे सिवा न मानो।''

(7) ग़ैब की बात जानने में अंबिया, शैतान और भूत परी बराबर हैं।

इसमाईल देहलवी ने लिखा है।

''और इस बात (ग़ैब जानने में) औलिया, अंबिया और जिन्न व शैतान और भूत परी में कुछ फ़र्क़ नहीं''

(तक़्वियतुल ईमान, पृष्ट 8)

(8) अंबिया हमारे बड़े भाई हैं।

इसमाईल देहलवी ने लिखा है।

"ईन्सान आपस में भाई हैं, जो बड़ा बुजुर्ग हो वह बड़ा भाई है। सो उस की बड़े भाई की सी ताज़ीम कीजिये।"

(तक़वियतुल ईमान, पृष्ट 60)

यही देहलवी साहब अपने ईस नज़रिये की वज़ाहत इन शब्दों में करते हैं।

" औलिया, अंबिया व इमाम ज़ादे, पीर व शहीद यानी जितने अल्लाह के मुक़र्रब बन्दे हैं वे सब ईन्सान हैं और बन्दे आजीज़ और हमारे भई हैं मगर उन को अल्लाह ने बड़ाई दी वह बड़े भाई हुऐ।" (तक़वियतुल ईमान, पृष्ट 60)

(9) अंबिया लाइलाह इल्लल्लाहु की फ़ज़ीलत जानने के मोहताज हैं।

मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल वहाब नजदी का अ़क़ीदा है। "अंबिया भी 'लाइलाह इल्लल्लाहु' की फ़ज़ीलत जानने के मोह़ताज हैं।" (किताबुत्तौह़ीद मुतरजिम, पृष्ट 29)

(10) रसूले पाक को मालिक व मुख़तार मानना इसाईयों का अ़क़ीदा है।

वहाबियों के अख़बार अहले ह़दीस अमरितसर में लिखा है। "कुफ़्फ़ार व मुशरिकीन से निकल कर ग़ारे सौर में छुपने वाले और भूक की तकलीफ़ के बाइस पेट पर पत्थर बांधने वाले। जंग में दाँत मुबारक शहीद कराने वाले, सरे मुबारक पर ज़ख़्म खाने वाले, अपने बचाव के लिऐ जंगों में खूद और ज़िरा पहन कर जाने वाले रफ़ीउ़श्शान रसूल के ह़क़ में ऐसा खयाल ज़ाहिर करना (के मालिक व मुख़तार हैं) अ़क्ल व नक़ल के ख़िलाफ़ और मसीह़ी अ़क़ीदे से माखूज़ है।"

(अख़बारे अहले ह़दीस अमरतसर, पृष्ट 4, मार्च 1942 ई0)

(11) हज़रत ज़ुलैख़ा रज़िअ़ल्लाहु अ़न्हा की सख़्त इहानत।

सनाउल्लाह अमरितसरी ने लिखा है।

"ह़ज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम का निकाह़ जु़लेखा़ से नहीं हुआ, क्योंकि एक तो उ़मर में बहुत बड़ी थीं दूसरे उस का चाल चलन भी ह़ज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम को मालूम था इस लिऐ ये निकाह़ नहीं हुआ।"

(अख़बारे अहले ह़दीस अमरितसरी, पृष्ट 8, 29, जनवरी 1942 ई0)

(12) हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम को बेगैर बाप मानना इसाईयत को मजबूत करना है।

वहाबियों के भरोसेमंद मोलवी इनायतुल्लाह असरी ने लिखा है।

"ह़ज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम को बे पेदर (बाप) मानना इसाईयत को तक़वियत (मजबूती) देना है।" (उ़यूने ज़मज़म, पृष्ट 24)

आगे लिखा है।

"ह़ज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम बे ग़ैर बाप के पैदा नहीं हुऐ उन का बाप यूसुफ़ था" (पृष्ट 22)

दूसरी जगह लिखता है।

"ह़ज़रत मर्यम अ़लैहस्सलाम को शादी शुदा न मानना मर्यम के साथ बहुत बड़ा ज़ुल्म है।" (पृष्ट 19)

एक और जगह लिखता है।

"ह़ज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम को बे पिदर (बाप) मानें तो ईसा अ़लैहिस्सलाम और ह़ज़रत मर्यम अ़लैहस्सलाम की बहुत बड़ी ख़िफ़्फ़त (शर्मिंदगी) है।" (पृष्ट 51)

(13) ह़ज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम अल्लाह तआ़ला के ख़लीफा नहीं।

वहाबियों के मोलवी रफ़ीक़ ख़ाँ पिसरोरी ने लिखा है।

"ह़ज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम अल्लाह तआ़ला क़े ख़लीफ़ा नहीं हैं।" (इस़लाहे अ़क़ाइद)

(14) अंबिया अ़लैहिस्सलाम अ़ैबदार होते हैं।

यही मोलवी रफ़ीक़ ख़ाँ लिखते हैं।

"अंबिया अ़लैहिस्सलाम अ़ैबदार होते हैं।"

(इस़लाहे अ़क़ाइद, पृष्ट, 154)

(15) तसर्रुफ़े औलिया अल्लाह को इसलाम में कोई दरजा नहीं ।

वहाबियों के मोलवी ह़कीम सादिक़ सियालकोटी ने अपने एक मज़मून में लिखा है कि।
''याद रहे कि तसर्रुफ़े औलियाअल्लाह को ईस्लाम के अनदर कोई दर्जा और मक़ाम हासील नहीं।

(अहले हदीस, पृष्ट, 11,नवम्बर 1953)

(16) या रसूलल्लाह कहने वाला काफ़िर है।

वहाबियों की मुस्तनद किताब तुह़फ़ऐ वहाबिया में है।
''अगर कोई ह़क़ न मानने वाला और रासती(सच्चाई) क़बूल न करने वाला ये ऐतराज़ करे कि तुम जो क़तअ़ी (यक़ीनी)तौर पर कहते हो कि जो कोई यूँ कहे या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहिवसल्लम मैं आप से शफ़ाअ़त चाहता हूँ तो वह शख़्स मुशरिक होगा और उस का खून मुबाह़ होगा। ऐसे लोगों को हम काफ़िर कहते है।'' (तुहफ़ऐ वहाबिया, पृष्ट 68)

(17) अंबिया और नेक बंदों को उन के इन्तेक़ाल के बाद पुकारना बहुत बड़ा शिर्क है।

वहाबियों के इमाम इब्ने तैमिया ने लिखा है।
''मलाइका (फरिश्ते), अंबिया और सुलह़ा से उन की वफ़ात के बाद इस तरह़ की निदा (पुकारना) ख़्वाह उन के मक़ाबिर (मजारों) के ज़रीये से हो या उन की अ़दमे मौजूदगी (न रहना) में या उन के मुजस्समों और तस्वीरों के रूबरू हो। मुशरिकीने अहले किताब और इसलाम के बिदअ़तीयों का एक शिर्क अ़ज़ीम है।'' (किताबुल वसीला, पृष्ट 43)

(18) या सिद्दीक़ या उ़मर वग़ैरा कहने वाला काफ़िर है।

ग़ैर मुक़ल्लिदीन के मुजतहिद क़ाज़ी मुह़म्मद बिन अ़ली शौकानी ने लिखा है।
''बेशक जो किसी मय्यित को पुकारे अगरचे खुलफ़ाऐ राशिदीन ही क्यों न हों, पस वह पुकारने वाला काफ़िर है और जो शख़्स उस के कुफ्र में शक करे वह भी काफ़िर है।''

एक जगह और यही क़ाज़ी साहब लिखते हैं।
"मूर्दों से ह़ाजात माँगना, उन से फ़र्याद करना और उन की तरफ़ तवज्जुह करना दुनिया का अस्ल शिर्क है।"(पृष्ट 60)

(19) ग़ौसे आ़ज़म शिर्किया लफ़्ज़ है।

वहाबियों के "अख़बार अहले हदीस" में है।
"ग़ौसे आ़ज़म शिर्किया लफ़्ज़ है।"

(पृष्ट 7, 19 फ़रवरी 1943 ई0)

(20) राम, लक्षमन और कृष्ण की नबुव्वत का ऐतराफ़।

नवाब वह़ीदुज़्ज़मा हैदराबादी ने लिखा है कि।
"हमें उन दीगर अंबिया की नबुव्वत का इनकार नहीं करना चाहिये जिन का ज़िक्र अल्लाह सुब्ह़ानहू ने अपनी किताब में नहीं किया है, जब कि किसी क़ौम में ख़्वाह कुफ़्फ़ार ही सही तवातुर (हमेशगी) के साथ ये बात मनक़ूल (साबित) है कि वह लोग अंबिया-व-सा़लिह़ीन (नेक बंदे) थे मसलन हिन्दुओं में राम चंद्र, लक्षमन, कृष्ण।" (हदयतुल मिहदी, पृष्ट 85)

(21) ह़ज़रत आ़इशा सि़द्दीक़ा की तौहीन।

मोलवी अ़ब्दुर्रहमान पानीपती साहब ने ग़ैर मुक़ल्लिद मोलवी अ़ब्दुल ह़क़ बनारसी की कही गई यह बात लिखी है।
"ह़ज़रत अ़ली से जंग करके ह़ज़रत आ़इशा मुर्तद हो चुकी थीं अगर बिला तौबा मरीं तो कुफ्र पर मरीं।"

(कश्फुलहि़जाब, पृष्ट 21)

(22) स़ह़ाबा किराम को बुरा भला कहना।

नवाब वह़ीदुज़्ज़मा हैदराबादी ने लिखा है कि।
"बाज़ स़ह़ाबा फ़ासिक़ हैं मसलन वलीद और ऐसी ही बात मुआ़विया, उमर, मुग़ीरा और मुसमेरा के बारे में भी कही जायेगी।" (नुजूलुलअबरार, पृष्ट 3, सफ़ह़ा 94)